विषय सूची

1. इस सूची का उपयोग कैसे करें.
2. नमक और प्रकाश एक कविता और अभ्यास.
3. नमक और प्रकाश.
4. परमेश्वर का साम्राज्य.
5. खंडित संसार.
6. मित्रों की विविधता.
7. सहिष्णुता बहुविश्वासी मानव समुदाय
8. आगे पठनीय.
पिछला पन्ना :– निर्धारित विषय के स्त्रोत ;Sources)

विश्व सम्मेलन सम्बद्व और असंबद्व सभी मित्रों के लिए खुला है।
इसका आयोजन विश्व भर के मित्रों की ओर से, विश्व मित्र कमेटी द्वारा सम्पर्क और परामर्श क लिए किया गया है यू के चेरिटी नं. 211647
आगे की सूचना कानफ्रेन्स की वेबसाइट पर प्राप्त की जा सकती है।

salt and light 2012.org
Or by writing to FWCC,1173 Euston Road, London U.K.,
NWI 2AX
Info (a) salt_ and light 2012.org

इस पुस्तिका का उपयोग कैसे करें।
नमक और प्रकाश बननाः– परमेश्वर के राज्य में निवास कर रहे मत्रगण और खंडित संसार

छठवें मित्र सम्मेलन का निर्धारित विषय है।
संसार के प्रत्येक भाग में आर्थिक, राजनैतिक और पर्यावरण सम्बन्धी उथल पुथ्ल मची हुई है। ऐसी स्थिति में हम स्वयं से पूछते है कि हमारा छोटा विविध समुदाय अपने विश्वास और आस्था को कैसे बनाये रख सकता है ताकि ईश्वरीय प्रेम जो कि इस धरती का उद्वेश्य है– यह शुभ समाचार समस्त संसार को बताया जा सके।
इस पुस्तिका का उद्वेश्य सम्मेलन में भाग लेने वालों के लिये सहायता प्रदान करना है। ऐसा सम्मेलन नई पीढ़ी के लिए कभी कभार होने वाली घटना व अवसर है. यह परंपरा रही है कि FWCC ट्रेनियलस और सम्मेलनों के पूर्व यह सम्पन्न होता है। यह उन लोगों को अवसर प्रदान करता है जो भी इसमें भाग लेना चाहते है––– मित्र समूह प्रतिनिधि, भिन्न भिन्न मित्र सम्मेलन ओर संसार में फेले हुये आराधनालये।
इस पुस्तिका में भिन्न भिन्न क्वेकर संस्कृतियों के निर्धारित विषय पर विचारों और चिन्तन का प्रतिबिम्ब सम्मिलित हैं इसमें प्रत्येक कथन और विचार, समस्त विश्व में फैले हमारे उन मित्र परिवारों के आधिकारिक अनुभवों से संबंध रखता है जो अपने विश्वास और आस्था के प्रति जागरूक है।
तमाम विश्वसम्मेलन, भिन्न भिन्न क्वेकर परंपराओं से जुड़े उन बहुसंख्यक मित्रों को अपूर्व और मूल्यवान अवसर प्रदान करते हैं जहॉ वे मिलकर आराधना कर सकें, एक दूसरे के विचार सुनें और संसार में सत्य के मित्र बनकर, अपने अनुभव परस्पर बॉट सकें। ;John 15:14)
इस तरह यह पुस्तिका कीनिया सम्मेलन में भाग लेने के लिए उन्हें मानसिक रूप से तैयार करती है व प्रेरित करती है, भले ही वे सम्मेलन में प्रत्यक्ष रूप से भाग न ले सके। परमेश्वर दिव्य एवं अतिम सत्य है। हम परस्पर चर्चा कर उनके अनुभवों के विषय में जानते है। हमारा कार्य मूल्यांकन कर निर्णय करना नहीं है –––––––– मात्र सत्य को जानना है। जैसा दूसरों ने अनुभव किया है। वे भले ही हमारी क्वेकर परंपरा से भिन्नता रखते हों हम खुले मन से उनके विचारों को सुनते व उनका स्वागत करते है।
ये उद्धरण हमारे मित्रों द्वारा भेजे गए विस्तृत विवरणों के अंश है इन्हें उनके पूर्ण प्रसंगों के साथ पढ़ने के लिए हमारी वेबसाइट देखें जहॉ ये पूर्णरूप से प्रकाशित है। saltandlight2012.org.
हमारे मित्र और विभिन्न समूह अपनी इच्छानुसार इन आंशिक या पूर्णरूप से दिये गए इन उद्धरणों का उपयोग कर सकते है जो निर्धारित विषय से संबंधित है। स्थान स्थान पर क्वेरीज हैं जिससे अर्थ निकाला जा सकें। व्यक्तिगत रूप से दिये गये विचार एवं मत लेखकों के निजी है।

हम आशा करते है कि हमारे मित्रगण छोटे छोटे अध्ययन समूहों के माध्यम से प्रत्यक्ष रूप से या अन्य उपायों से मूल पाठ विचार और पड़ताल कर अपनी धारणा बनायेंगे। इसमें मित्रों की समझ और ज्ञान का विस्तार होगा। साथ ही उनका आध्यात्मिक ज्ञान और अभ्यास`गहरा होगा जिससे उनके मन–मस्तिष्क इश्वर की शिक्षाओं को आगे बढ़कर ग्रहण करेंगे।

Salt and light
by-Thomas Owem Aotearoa
New Zealand Yearly New Zealand Yearly
Meeting Meeting

From- Himmo Enter Ruinas by octario Paz

1948

एक अभ्यास करने के लिए :

1 किसी शान्त स्थान पर पेन और कागज लेकर बैठ जाये क्षण दो क्षण के लिए शांत रहें। नमक और प्रकाश – इन दो शब्दों पर अपना ध्यान केन्द्रित करें और देखें कि कैसी छवियॉ बनती है।

2 जब आप तैयार हो तब नमक और प्रकाश के विषय में व्याकरण और हिज्जों का ध्यान न देकर अपने विचार गद्य अथवा पद्य में लिखें। आप अपनी इच्छानुसार छवियों का चित्रांकन या रेखांकन कर सकते है।

नमक और प्रकाश

यीशु मसीह अपने अनुयायियों से यह नहीं कहते कि वे संसार को नमक और प्रकाश में बदल दें। वे तो कहते हैं कि वे स्वयं नमक और प्रकाश बन जाये।

1. सत्य बोलनाः– इनका अर्थ यह है कि जो कुछ हो रहा है उसके विषय में सत्य ही कहें। विपरित परिस्थितियों में भी जब ऐसा बोलना प्रिय न हो हर स्थिति में सत्य बचनों पर द्रढ़ रहें। नकारात्मक वस्तुओं को लोगों की जानकारी में लाये ताकि उनका रूपांतरण हो सके।

2. हम दूसरे लोगों को भी सत्य बोलने के लिए प्रोत्साहित व प्रेरित कर सकते हैं। हम अकेले संसार को नहीं बदल सकते यहॉ तक कि ईश्वरीय मदद और उदारता से भी नही क्योंकि धरती पर ईश्वरीय राज्य की स्थापना के लिए ईश्वर हम से और भी प्रयास करने की अपेक्षा करता हैं।
3. हम स्वयं को और उन्हें भी शिक्षित करे जो परिवर्तन लाने की शक्ति और क्षमता रखते हैं।

KATHY BEREEN,Ramallaha M.M.
Palestine

मनुष्य रूप में हमारा जीवन अदभुत व बहुमूल्य है, क्वेकर्स की धारणा हे कि '' प्रत्येक मनुष्य में परमात्मा की ज्योति व प्रकाश है'' प्रकाश परमेश्वर का प्रतीक है वह हमारी अंतरात्मा में है। इसीलिए हमारा यह कर्थ्तव्य बनता है कि ज्ञान की उस ज्योति को सदा जलाये रखे क्योकि प्रकाश की उपस्थिति में ही वस्तुओं को देखा और समझा जा सकता है। परस्पर भाई चारे का भाव रखकर हम गर्व से कह सकते है। कि हमारा मार्ग ईश्वरीय प्रकाश से आलोकित है।
ईसा हमारा मार्ग दर्शन इन शब्दों में करते है। :–
'' तुम अपना जुआ दूसरों की भलाई के उद्वेश्य से अपने कंधो पर रखो–उनके लिये जो भूखे है और कष्ट भोग रहे हैं उन्हें राहत पहुंचाओं तभी अंधेरे को चीरकर प्रकाश दिन की तरह जगमगायेगा। 15–58–10

भास्कर सोनकाम्बले, जनरल कांफ्रेन्स मित्रगण
भारत

नमक और प्रकाश बनने का मेरे लिए क्या अर्थ है? प्रतिदिन के जीवन में अपने नमक और प्रकाश का उपयोग मैं तुम्हारे लिए कैसे करता हूॅ। मेरी अन्तरात्मा का प्रकाश उस समुदाय को कैसे प्रभावित करता है जिसमें में रहता हूँ?
एक विद्यार्थी ने नमक का रासायनिक विश्लेषण कर पता लगाया कि नमक जीवन के लिए कितना उपयोगी है, जैसे कि सर्वविदित है कि नमक सोडियम से बनता है। उस पानी में डालने पर बहुत विस्फोटक गैस बनती है क्लोरीन से भरे कमरे में जाने पर थोड़ी देर में मृत्यु हो सकती है। ईश्वर ने इन दोनों को सोडियम क्लोराइड के रूप में रखा है जिसे हम टेबिल साल्ट कहते हैं और यह जीवन के लिए परम आवश्यक है।

Nelson Mederdo Ayala, E 1 Solvador Friends Annual Meeting

हमारे जीवन में ईश्वर की उपस्थिति सामान्य और खतरनाक तत्वों तक को जीवनदायी गुणों के रूप में कैसे रूपॉतरित कर देती है।
हम एक ऐसे खंडित संसार में रह रहे हैं जहॉ राजनैतिक और सामाजिक समस्याएं हैं क्वेकर्स के रूप में हम इसका क्या उत्तर देते है।
एक उत्तर है ''नमक और प्रकाश '' के समान बनों,
दाओइज्म धर्मग्रन्थ में इसकी अभिव्यक्ति ''पानी बनने'' से की गई है।
नमक प्रकाश और पानी ये हमारी सर्वोत्तम वस्तुएं है और दस हजार वस्तुओं को लाभ प्रदान करती हैं। ये शांति और कोमलता के प्रतीक व रूपक हैं, मनुष्यों को उन से शिक्षा लेना चाहिए, वे प्रतियोगी नहीं है फिर भी हमारे टूटे हुए संसार के अंग हैं और हमार बीच में रहती हैं

Bomgsoo Kwag, seoul .M.M.

नमक और प्रकाश से प्रेरणा लेकर में कमजोरी की शक्ति को ढ़ाल बनाकर, कठोरता पर विजय कैसे प्राप्त कर सकता हूॅ ९ मन्द गति से बहता पानी समय आने पर कठोर चट्टान को भी तोड़ देता है।
निर्धारित विषय के स्त्रोत ❛;वनतबमे वित जीम जेमउमद्ध
शीम पर विचार करते सम अंतर्राष्ट्रीय योजना कमेटी ;IPCद्ध ने बाइबिल के अनेकों उद्धरणों ;Passages से प्रेरणा प्राप्त की ––समाविष्ट––
''तुम धरती के नमक हो, परन्तु यदि नमक का खारापन समाप्त हो जाय तब दुबारा उसे कैसे खारा बनाया जा सकता है अपना गुण खोकर वह किसी के लिए भी उपयोगी नहीं रह जाता सिवाय इसके कि वह फैंक दिया जाय व पैरो तले रौंदा जाय''
मैथ्यू 5:13

'' तुम संसार के प्रकाश हो पहाड़ी के ऊपर बना नगर छिपा नहीं रह सकता। लोग दिया जलाकर बर्तन के नीचे नहीं रखते क्योंकि इससे प्रकाश ढंक जाता है। वे उसे ऊँचें स्थान पर रखते है जिससे वह सबको प्रकाश देता है। इसी तरह तुम अपने प्रकाश से दूसरों को प्रकाशित करो ताकि वे तुम्हारे अच्छे कार्यो को देख सकें और स्वर्ग में तुम्हारे पिता का गौरव वढ़ा सकें।'' 5:14—16

'' पहले उसके राज्य में प्रवेश करो, उसके बताये सही मार्ग पर चलो और तुम्हे सब कुछ दे दिया जायेगा'' मैथ्यू 6:33

'' तब तुम्हें इस तरह प्रार्थना करनी है। '' हे हमारे स्वर्गीय पिता जैसी तुम्हारी इच्छा स्वर्ग में पूरी होती हो वैसे इस पृथ्वी मे भी स्थापित हो। हमें रोटी दो तुम हमें उसी तरह ऋण मुक्त कर दो जैसा कि हमने दूसरो को किया है, हमें प्रलोभनों से दूर रखो, बुराइयों से बचाओ। तुम्हारा राज्य, पराक्रम और गौरव सदा के लिए है –––––– आमीन''
मैथ्यू 6:9–13प्रभु की प्रार्थना
'' सर्व शक्तिमान प्रभु ने कहा है –––––––अंजीर के वृक्ष के नीचे प्रत्येक अपने आनन्द का प्याला बिना किसी भय के उठायेगा''
मीका 4:4
'' है मनुष्य! उसने तुम्हे बताया है कि अच्छाई क्या है? और वह तुमसे क्या चाहता है? मात्र इतना कि सही और न्यायोचित काम करो, दयालु बनो और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता और सरलता से चलो ''
मीका 6:8
मुख्य विषय की पूर्ति ल्यूका के उद्धरण से की गई है। 17:20–21
'' एक बार फारसी के यह पूछने पर कि ईश्वर का राज्य कब आएगा यीशु मसीह ने उत्तर दिया 'ईश्वर का राज्य ऐसा नहीं है जिसे देखा जा सके। न ही लोग कहेंगे कि इश्वर का राज्य यह है – वह है क्योकि ईश्वर का राज्य तुम्हारे ही बीच में है''
या, ''तुम्हारे भीतर''
शीम का दूसरा सहायक पूरक उद्धरण अठारहवी शताब्दी के अमेरिकन मित्र जान वूलमेन 1763 का है।
'' यहॉ हमारे लिए एक भारी समान लक्ष्य है। वह यह है कि हमारे पास जो सार्वमौम समस्त विश्व के लिए दिव्य प्रेम का खजाना है वह हमारे जीवन का प्रधान लक्ष्य व कार्य बन जाये।
ब्रिटेन–वार्षिक मीटिंग क्वेकर फेथ और अभ्यास 23:24
बाइबल के समस्त उद्धरण ;फनवजमेद्ध नवीन अंतर्राष्ट्रीय संस्करण ;टमतेपवदद्ध से लिये गये है। ब 2010

Being Salt and Light
The study Booklet for the sixth World Conference of Friends
KABARK UNIVERSITY, KENYA
17-25 APRIL 2012

छठवॉं विश्वमित्र सम्मेलन के लिए अभ्यास
पुस्तिका काबारक यूनिवर्सिटी, कीनिया
17 – 25 अप्रैल 2012.

हम मित्रगण सोचते हैं कि जब हम अर्धप्रकाश से प्रेरित होकर कार्य करते हैं तभी हम उस खोल आवरण को तोड़कर बाहर आ सकते हैं जो हमारे चारों ओर फैला हुआ है और जो प्रभु को हमसे दूर करता है। तभी हमारी आत्मा उस पवित्र आत्मा से जुड़ती है। इस तरह ईश्वर के साम्राज्य की खोज पूरी होती है। क्राइस्ट हमारे पास आते है और कहते है कि हम उनकी शरण में जाये क्योंकि ईश्वर का राज्य हमारी प्रतीक्षा कर रहा है। भले ही हममें कितनी ही कमियॉं और दोष हों यदि हम खुले मन से उसके पास जाते हैं। तो वह हमारे जीवन को बदल सकता है।

वह कौन सा खोल आवरण है जो क्राइस्ट का प्रकाश मुझ तक पहुँचने में बाधा बन रहा हैं

जब पास्कल ने अपनी प्रामाणिकता के विषय में मुझे जानकारी दी तब वे मुझ से कहा करते थे '' मैं कभी भी काम की तलाश नहीं करता–वह स्वयं मुझ तक पहुँच जाता है। सान लुलियन में वे सीधे सादे और सरल व्यक्ति है। उनके कार्य को सभी लोग जानते है' और वे हमेशा '' जीवन की यूनीवर्सिटी से, जहॉं क्राइस्ट मेरे शिक्षक है।''

David Tin Taya, National Evangelical Friends Church in Bolivia.

क्या क्राइस्ट जीवन की यूनीवर्सिटी में मेरे शिक्षक है? यदि नहीं तो तुम्हारा खारापन लावण्य–ैंसपदमेद्ध मैं कहॉं से पाता हॅं?

'' धर्म के बिना लोग नष्ट हो जायेंगे क्योंकि फिर उनके पास ऐसा कुछ भी नहीं है जो उनके सदगुणों का पोषण कर सके '' उन्हें बढ़ाने में सहायक हो

श्रवेम डंतजप

उन दिनों, जब लोग नमक की उपयोगिता से सचमुच परिचित थे नमक उनके लिए सोने के समान था। वर्षो तक सैनिकों और मजदूरों को उनके श्रम का मूल्य नमक से चुकाया जाता था।

और हमारे पूवजो को नमक की आवश्यकता क्यों हुई? नमक का प्रयोग मुख्य रूप से मॉस को खराब होने से बचाने के लिए किया जाता था। ऐसी संकटपूर्ण विशेष स्थिति में प्रथम दिन के भोज के बाद वह गिद्धों के लिए छोड़ दिया जाता था।

क्या ईयाइयत के साथ भी कुछ ऐसी स्थिति नहीं है।

कुछ लोगो के लिए यह बात विचार के योग्य बन गई कि संरक्षण के योग्य क्या है

प्रेम, अच्छी आदतें और परस्पर एकता का भाव ऐसा लगता है जैसे गुजरे हमाने की बातें हो`गई है।

Jarge Luis Pena Reyes, Cuba Yearly Meeting.

हम अंधेरे में प्रकाश के समान है। संसार हमें सरलता से देखपाता है और प्रायः अस्वीकार भी कर देता है क्योंकि ईश्वरीय राज्य और विस्तृत संस्कृति की धारण में कठोर अंतर है। इसमें क्राइस्ट का प्रकाश छिप जाता है। अस्वीकृत के खतरे के`बावजूद हमें निर्भीकता के साथ जीवन बिताने को कहा जाता है। जीसस हमसे कहते हैं कि हम अपने प्रकाश दीप स्ंउचद्ध अर्थात आत्मज्ञान से पूर्ण और प्रकाशित जीवन को उच्च धरातल पर रखें जिससे दूसरों को भी प्रकाश मिल सकें। हमसे आशा की जाती है। हम संसार में ईश्वरीय राज्य के सच्चे प्रतीक चिन्ह–पहचान बने। लेखक जान के ये शब्द हमें आशा दिलाते हे।

'' प्रकाश अंधेरे में चमकता है। अंधकार प्रकाश पर विजय प्राप्त नहीं कर सकता''

Micah Bales, Onio yearly Meeting

वह क्या है जो मुझे क्राइस्ट के प्रकाश को और अधिक पूर्णता से `बिखेरने से रोक रहा है। अनेक ऐसे अवसर आए है जब क्राइस्ट के प्रकाश ने उन कठोर सत्यों को प्रकट किया है जो पहले स्वीकार करने में कठिन लगते थे।

दुखी और टूट चुके लोगों को राहत देने और उनके घावों को भरने के लिए वह हम से कहता है कि नमक जैसे बनकर संरक्षण करों। उसके शब्दों को याद रखों ताकि प्रभु की कृपा दूसरों पर ही हो सकें। जिस प्रकार ईसाइयत की राह में हमें नमक की तरह उपयोगी बनकर जीवन क रक्षा करता है। ताकि जो अंधकार में भटक रहे हैं वे लोग भी मुक्तिदाता की शरण में जाकर लाभ उठा सकें।

पाप संसार में पहले आदमी एडम के माध्यम से आया। इसने प्रारंभ में जो इश्वर का प्रकाश था उसे विकृत कर दिया। धरती में अेंधेरा छा गया। मसीहा के आने से मनुष्य के जीवन में प्रकाश आया। जीसस ने अंधेरे को दूर कर दिया क्योंकि वे स्वयं प्रकाश है। जब हम उन्कहे अपने जीवन में अपनाते हैं तब वह हमारे जीवन में आता है। उसका प्रकाश हमारे माध्यम से जीवन में चमकता है उसकी उपस्थिति से अंधेरा दूर हो जाता है क्योंकि वही संसार का प्रकाश है।

जानः5–9 अग्रदूत जान हमें प्रेरित करते हैं कि जो क्राइस्ट को जानते है वे प्रकाश की राह पर आगे बढ़ते है और जो अंधकार से भरी पापपूर्ण जिन्दगी बिताते हैं वे उससे निककट सम्बन्ध नही रख सकते और उससे दूर हो जाते हे। ज्ञान के मोर्ग प्रकाश पर चलकर हममें आपस में भाई चारे की भावना उत्पन्न होती है। और हम उसके प्रेम और अच्छाई के हकदार बनते है। जीवन में इसी प्रकाश ज्ञान और नमक उपयोगिता का भाव के माध्यम से संसार का बहुत भला हो सकता है।

Paster Florance Irungu, Nairobi Yearly Meeting, Kenya

परमात्मा की राह में सदा आनंददायक इस नमक और प्रकाश ज्ञान पाने के लिए तथा दूसरों के साथ फलदायी उपयोगी सहभोगिता के लिए किन बातों की जरूरत है? अपने अन्दर और जब हम प्रकाश पर ध्यान लगाते हैं तब हम अपने चारों ओर फैले ईश्वर के प्रकाश पर ध्यान देना सीखते है। उस प्रकाश से हमारे जीवन में परिवर्तन आता है जीवन सार्थक बनता है इश्वरीय प्रकाश हमारे मन और आत्मा को एक नये ढंग से देखने में सहायक होता है। हमें एक नई द्रष्टि प्रदान करती है और यह बताता है कि हमें किन बातों पर ध्यान लगाने की जरूरत है। यह आन्तरिक और बाहय सांसारिक जीवन को मन की आंखों से देखने का दर्शन चेपसवेचीलद्ध है। यह आंतरिक और बाहय द्रष्टि में परस्पर सम्बन्ध की खोज करता है।

नमक ऐसी वस्तु है जो हमें शिक्षा देती है कि मनुष्य के जीवन को संरक्षण देने और उसे बचाने की जरूरत है जमक स्वाद को बढ़ाता है और इस द्रष्टि से बड़ी चीज है। यह मनुष्य के स्वद का आधार है। इसी तरह की भूख हार्दिक इच्छा हमें ईश्वर के लिए रखना चाहिए। यही जीवन का आधार है। इसका यह अर्थ लगाना ठीक नहीं होगा कि नमक केवल स्वाद से संबंध रखता है। यह नमक जीव विज्ञान की द्रष्टि से देखें तो यह सुरक्षित रखता है, रक्षा करता है तथा जीवन को संभव बनाता है और यही कार्य जिसमें हम रहते और चलते फिरते हैं वही ईश्वर करता है।

(Acts 17:28)

बेशक हमें ईश्वर के प्रकाश और नमक जैसा बनना है। अपने सम्पर्क में आने वाले और संसार के दूसरे लोगों के जीवन में प्रकाश विखेरना और उनके जीवन को सार्थक सुरक्षित आनंद दायक और उपयोगी बनाने का कार्य हमारा है

Brent Bill, Indiana

मैं ईश्वर के प्रकाश को अपने जीवन में कैसे दर्शाता हूॅ और जीवन के आनन्द को उस प्रकाश के माध्यम में कैसे बढ़ाता हूॅ?

तो हम नमक और प्रकाश का उपयोग क्यों करें। यह नमक और प्रकाश्य हमारी अंतरात्मा हमारे अंदर में है जो संसार के दुखी लोगों का दूर करने के लिए आवश्यक है। नमक और प्रकाश बनना एक ओर तो अकेले व्यक्ति को फोन काल करना जैसा सरल है दूसरी ओर यह इतना ही जटिल और कठिन है जैसे मिलकर अध्यात्मिक संसार को जलाकर नष्ट कर देना। इन दोनों में प्रेम का मार्ग अधिक अच्छा है। हमारे पास जीसस का उदाहरण है जिन्होंने ईश्वर के प्रकाश के माध्यम से दयाभाव, प्रेम और करूणा से दूसरों की सेवा की।

नमक और प्रकाश बनना रविवार की सुबह गिरजाघर की लंबी लंबी बेन्चों पर बैठना जैसा सरल नहीं है। एक पात्र में रखा नमक कभी भी भोजन को स्वादिष्ट नहीं बना सकता। जार्ज फाक्स के जीवन के एक पहलू ने मुझे हमेशा प्रभावित किया है। और वह है उनके द्वारा प्रकाश और नमक की खोज क्योंकि वे उस समय के धार्मिक संसार की यथास्थिति को स्वीकार करने के इच्छुक नहीं थे। उन्होंने जीवन भर नमक और प्रकाश के महत्व को शब्दों और कार्यो मे उतारकर प्रदर्शित किया।

जब हम अपने पारस्परिक सम्बन्धों का आधार प्रेम और ज्ञान बनाते है तब हमें वही ईश्वर सब जगह दिखाई पड़ता है। वही हमारे जीवन में प्रकाश और उर्जा प्रदान करता है। जब हम अपने जीवन में ईश्वर को समझते हैं और अपने ज्ञान और अनुभवों का आपस में बॉटते है तब नमक की उपयोगिता से प्रेरणा लेकर अपने आसपास के लोगों की आध्यात्मिक चेतना को जाग्रत करते हैं

Susan Mcraken, Lowa Yearly Meeting

मेरे भीतर क्या है जो प्रकाश को रोकता है और नमक को ठकेलता है? मैं अपने संसार में ईश्वरीय प्रेम -----ईश्वरीय प्रकाश और नमक को आपस में कैसे बॉट रहा हूँ?

''प्रत्येक अपनी वाइन अंजीर के वृक्ष के साये में का आनंद उठायेगा-- कोई उन्हें भयभीत नहीं कर सकेगा'' मीका अपने संसार का नमक और प्रकाश है ------जैसे हम हैं केवल अपनें अन्याय और अपराधों को स्वीकार कर और सबके सामने प्रकट करने के बाद ही क्या वह अपने शांत राज्य की झलक देख पायेगा। औह ! यह राज्य अनोखा है।

अपने टूटे हुए संसार में नमक और प्रकाश बनने के लिए हमें देवदूतों की कठोर भाषा का उपयोग करने की जरूरत नहीं है। वे तो अपने समय के शिशु थें। हमें अपने समय के अनुसार शब्दों का प्रयोग करना चाहिए, चाहे वे हमें दबाने कवाले ही क्यों न हो। हम जिन शब्दों का भी प्रयोग क्यों न करें। हमें अन्यायपूर्ण कार्यो को द्रढ़ता से सबके सामने लाना चाहिए।

हमें दशाना चाहिए कि लालच और भय का स्थान न्याय ले सकता है। एक अच्छे और न्यायोचित संसार में युद्ध का कोई स्थान नहीं है। हममें से प्रत्येक को अपने अपने ढंग से इस स्वप्न को पाने की दिशा में प्रयत्न करने की अपेक्षा की जाती है।

हम ऐसा अनुभव कर सकते हैं कि इस संसार में भयमुक्त वातावरण सरलता से नहीं बनेगा। ऐसी भावनाएं हमें निराश कर सकती है। परन्तु हम ऐसा अवश्य कर सकते हें कि हम ईश्वर पर विश्वास करने वाले लागों की संख्या को बढ़ाये जो अपने पड़ासियों को हिंसा का त्याग करने, भय को छोड़ने और कुछ समय अपने साथ बिताने की प्रेरणा दे सकें। आइये ऐसे समुदाय की वृद्धि करने के लिए हम सब प्रतिबद्ध हो जायें।

Tina Coffim, South central yearly Meeting,

न्यायोचित और अच्छे संसार के स्पप्न को साकार करने के लिए मैंने कैसा प्रयत्न किया है? अन्याय की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए वह आवश्यक है कि प्रिय और मधुर का प्रयोग किया जाये। यदि ऐसा है तो यह कैसे किया जा सकता है?

ईश्वर का राज्य

ईश्वर का राज्य भविष्य में आएगा मार्क 9:1, 11:10:15:43 जब क्राइष्ट की शक्ति और गौरव वढ़ेगा तथा इस राज्य के शत्रुओं का नाश होगा जीसस ने बताया की ईश्वरीय राज्य की कल्पना भविष्य में पूरी होने वाली सचाईहै जो जीसस के दुबारा आने पर पूरी होगी। भविष्य सत्य रूप में साकार होगा और यह एक बदला हुआ संसार होगा।

अंत में वह समय आ गया है जब ईश्वर मसीहा को इस संसार में भेजेगा ताकि वह अपना शासन प्रारंभ कर सके। यद्यपि उसने अपनी योजना बहुत पहले बना ली थी पर उसने धेर्यपूर्वक सही समय की प्रतीक्षा की ;Galations 4:4) इस प्रसंग में हमारे लिए वह समय आ गया है जब हम अपने हृदय में ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करें। इस नये राज्य में नमक व प्रकाश बने। इस राज्य को तुम खुली ऑखों से नहीं देख सकते वह तो तुम में ही है। ऐसे लोगों के समुदाय जिन्होंने उसकी सत्ता को अपने जीवन में माना वे ही

इस ईश्वरीय राज्य के सच्चे निवासी है। इस राज्य में हमें वह प्रकाश बनना है जो सर्वत्र समकता रहेगा। और दूसरे लोग भी आयें औयसर इससके जुड़ें–

Simon Bulimo, Lugari Yearly Meeting Kenya

यदि ईश्व के राज्य का अर्थ ईश्वर की पूर्ण प्रभूसत्ता है तो ''ईश्वर का राज्य तुम्हारे ही भीतर है'' का क्या अर्थ है? इसका अर्थ यह है कि राज्य उन लोगों में बसता है जिन्होंने अपना जीवन ईश्वर की इच्छा को समर्पित कर दिया है जैसा कि वे उसे समझते है।

ईश्वरीय राज्य राजनैतिक राज्य नहीं है। इजरायत आज एक राज्य अवश्य है परन्तु ''ईश्वरीय राज्य'' की कल्पना से दूर है। परन्तु ईश्वर के राज की झलक उन लोगों के महान और शानदार जीवन में देखी जा सकती है। जिन्होंने अपने आप को और अहं को धर्म से परे ईश्वर को समप्रित कर दिया है। यह दलाईलामा, आर्चबिशप टूटू, मदर टेरेसा, लुबाविघर रेवे और लाखों अन्य सामान्य विभिन्न आस्था और विश्वास रख्ने वाले लोगों के जीवन में देखी जा सकती है।

Sind a Qlsvig Whittaker
International member living ensreel

''ईश्वरीय राज्य तुम्हारे ही भीतर है'' इस धारणा का मेरे जीवन में क्या अर्थ है? दूसरों के लिए इस सम्बन्ध में मेरे क्या विचार हैं?
हमारी अर्थव्यवस्थाऍं कार्वन पर आधारित है जो कि अपने विकास के लिए कोयला, तेल और गैस पर निर्भर है। धन कमाने और करोड़ों लोगों की`गरीबी को दूर कर उनके जीवन स्तर को ऊॅचा उठाने के लिए हम पर्यावरण के प्रदूषण का ध्यान नहीं रखते, पर्यावरण के प्रदूषण और विकास सम्बन्धी समस्याओ को दूर करने लिए हमें ऐसी अर्थव्यवस्था की जरूरत है जो बदली हुई परिस्थितियों के अनुसार हो।
'' अपने पड़ोसियों से वैसा ही प्यार करो जैसा तुम अपने से करते हो'' इन शब्दों में छिपी प्रेम की इस मूल भावना को अपनाने के उद्देश्य से हमें व्यक्ति के रू॰ में नहीं वरन् समस्त संसार के समस्त मानव समुदायो और समाज को अपने कार्यो के प्रति अपनी जिम्मेदारी को स्वीकार करना होगा।
प्लानिंग कमीशन मे कहे गये शब्द मुझे भी प्रभावित करते है। मीका 6:8 ''और प्रभु तुमसे क्या चाहता है? यही कि न्याय के रास्ते पर चलो, दयालुता से प्रेम करो और अपने प्रभु की राह प विनम्रता के साथ आगे बढ़ो'' ल्यूक 17:20–21:
'' ईश्वर का राज्य भौतिक वस्तुओं के रूप में नहीं आ रहा ।है जिसे देखा जा सके –– ईश्वर का राज्य तुम्ही में बसता है '' दयलुता'' का अर्थ मेरे लिए करूणा और प्रेम है।
श्रनसपवद`जंतहंतकजए भ्वदह ज्ञवदहए डण्डण बेपदं
'' न्याय और दयालुता का मेरे लिए क्या अर्थ है? विनम्रता से ईश्वर की राह पर चलते हुए क्वेकर्स पृथ्वी पर ईश्वरीय राज्य को बना सकते है।
प्रारंभिक क्वेकर्स ने ईश्वर के राज्य और उसकी आवश्यकता के महत्व को व्यक्तिगत रूपांतरण
मुक्ति–`सअंजपवतद्ध और एक नई सामूहिक चेतना के एक रूपक के रूप में ग्रहण किया भावी राज्य या किसी प्ररस्कार के रूप में नहीं––– 1676 में फ्रान्सिस हाउगिल ने इस रहान्य का वर्णन इन शब्दों में किया '' ईश्वर के स्वर्गीय राज्य के साथ ईश्वरीय शक्ति के उदय से सैकड़ों लोगों को एक साथ खड़ा कर दिया हर दिन प्रभु के दर्शन होने लगे हम सबके हृदय आनंद से भर उठे और हमने एक दूसरे से कहा ''क्या ईश्वर का राज्य हमारे बीच आ गया है।''
रहस्यमय ईश्वरीय राज्य जिसे हम दोनों देखते हैं या नहीं देख पाते वह आ गया है या आ रहा है। दूसरे सभी आध्यात्मिक सत्यों के समान व्यक्तिगत और सामान्य चेतना से इस रहस्य को न तो समझा जा सकता है न वर्णन किया जा सकता है। एक चेतना के रूपांतरण के रूप में इस सत्य का अनुभव किया जा सकता है।

Carole Spencer Richmond, In

ईश्वरीय राज्य की धारणा से मेरा क्या सम्बन्ध और अनुभव है?

मित्रों ने आश्चर्य व्यक्त किया है कि ''हम ईश्वर के राज्य में कैसे रहते है? जार्ज फाक्स ने घोषणा की कि काइस्ट आंतरिक गुरू के रूप में आए थें और वे इस संबंध में उन्होंने कहा था, फाक्स के इस विश्वास की प्रभु का दिन आ गया है और उसकी शक्ति सवोच्च है' से प्रेरित होकर, मित्रों के एक छोटे समूह ने, अंग्रेजी गृह युद्ध (Civil War) के समय, एक खंडित संसार में ईश्वरीय राज्य में रहने की प्रेरणा पाई। प्रारंभिक ईसाइयत के काल में अपनी प्रामाण्किता, साहस और प्रतिबद्धता गैर समझौताबादी कि ऐसा भी राज्य हो सकता है जिसमें शत्रुओं के प्रति भी प्रेम का भाव हो––– इन सबको प्रमाणित करने के लिए उन्हें जेल जाना पड़ा।

350 वर्षो के इतिहास में – आत्मस्फूर्ति से पूर्ण मित्रों ने आदम के पूर्व की स्थिति उसके पतन के पहले को बहाल करने के लिए इस टूटे खंडित संसार में समझौते की आवश्यकता का अनुभव किया। ईश्वर का राज्य इस संसार का नहीं है ;John 18:36) परन्तु हम इसी संसार में रहते हैं। मनुष्य केवल रोटी के सहारे नहीं रहता परन्तु अपा अस्तित्व बनाये रखने के लिए उसे मानसिक और आध्यात्मिक पोषण की आवश्यकता भी होती है।

मूल भावना, आस्था और कार्य, प्रेम, न्याय, गैर समझौतावादी सिद्धान्त व दूसरों के साथ साथ अनुकूलन बनाये रखने की व्यवस्था– इन सबको देखकर यह समझा जा सकता है कि हम इस सब के और आने वाले पूर्ण ईश्वरीय राज्य के बीच की अंतरिम स्थिति में रहते है। –– परन्तु अभी भी यह ईश्वर का ही राज्य है ईश्वर का ही समय है।

Lv. Fredrick Allen, Iowa Yearly Meeting.

ईश्वरीय राज्य की झलक आप कहॉ देख्ते हैं? जिस स्थानों ओर जिस रूप में आप अपने जीवन में ईश्वर की झलक दैवी आदर्श देखते हैं उससे क्या आपको आश्चर्य नहीं होता?

अमेरिका में इस समय एक नई अभिव्यक्ति दिखाई देती है। वह है '' आगे बढ़कर भुगतान करना'' इसका अर्थ है किसी दूसरे के`लिए कोई दयापूर्ण कार्य करना। इसके बदले मे समय आने पर वे लोग भी इससे प्रेरणा लेकर दूसरों के लिए बढ़िया कार्य करते हैं।

मेरी पुत्री एक वेट्रेस है। एक दिन कुछ लोगों ने वहां खाया और बगैर भुगतान किए रेस्टारेंट से चले गए यह रकम वेट्रेस के वेतन से ही कटना तय था। लंच करते समय कुछ लोगों ने इस घटना को देखा और उन बेईमान लोगों का बिल खुद चुका दिया। इससे प्रभावित मेरी पुत्री ने जरूरत मंद लोगों की प्रति दयालुता प्रदर्शित कर उनक सहायता की। ऐसे लोगों के माध्यम से जो निस्वार्थ भाव से आगे आकर दूसरी की सेवा करते है और गलतियों को दयाभाव से सुधारते है। ही इस संसार में एक नया परिवर्तन होगा।

Rethaa McCuthen North West Yearly Meeting

कल और आज, मैंने दयालुता का कौन सा काम किया है? यदि मित्र संसार दूसरों की एक गलती सुधारने में अपना ध्यान लगाएँ तों संसार को क्या लाभ होगा?
जीसस के अनुयायी न तो शासक थे, न संत और न बुद्धिजीवी थे। वे तो किसान, मछुआरे और संभवत पितृमूलक परिवारों से निकाले गये लोग थें। जीसस समस्त सत्ता ;च्वूमतद्ध पर आधारित संबंधों के संसार के स्थान पर ऐक दूसरे प्रकार के राज्य के बारे में बताते हैं और घोषणा करते है कि ऐसा रात्य उन सबके लिए खुला रहेगा जो ईश्वर से प्रेम करते है। वे साफ घोषणा करते है। कि यह राज्य गरीबों, औरतों और बच्चों का है।
देखे ल्यूक 6:12
तुम धन्य हो गरीब और अभाव ग्रस्त हो क्योंकि यह इश्वरीय राज्य तुम्हारे ही लिए है।
हम उस मोती और खजाने के बारे में क्या करते हैं जाू दूसरों को उस ईश्वरीय राज्य में रहने के लिए प्रोत्साहित करने वाले उपायों से हमने पाया है। हम उस राज्य में कैसे रहते हैं। जहॉ कोई भेदभाव नहीं है और न कोई समाज और जाति से बाहर नहीं हैं एक तरह से ऐसा जीवन सामाजिक भलाई के कार्य करने की हमारी तीव्र इच्छा की पूर्ति करता है।

Marit Kromberg, Norway Yearly Meeting

जो लोग सांसारिक राज्यों को अधिक महत्वपूर्ण समझते है, उन्हें हम कैसे ईश्वरीय राज्य के बड़े उपहारों के बारे में बता सकते है।
ईश्वरीय राज्य के बारे में चर्चा करते समय दो समस्याएं हमारे सामने आती है। ईश्वर का राज्य क्या सांसारिक राज्य की तुलना में राजनीतिक रूप से बेहतर राज्य हैं या समय के अंत में आने वाला एक काल्पनिक राज्य है। प्रथम समस्या यह है कि हम सरलता से ईश्वर और उसकी अनंतता के द्रष्टिकोण को खारिज कर देते हैं और दूसरी ओर हम भूल जाते है कि हमें यहॉ संसार में ईश्वर की इच्छा को ही कार्य रूप में परिणित करना है क्योंकि अंत में किसी भी तरह स उसका अनुभव करना ही पड़ेगा।
जार्ज फाक्स और क्वेकर्स ने ईश्वरीय राज्य का अनुभव करने` लिए एक उपाय खोजा वह ईश्वर जो हमारे भीतर है जब हम आराधना के लिए क्राइस्ट से मिल सकते हैं। और आन्तरिक राज्य में उससे निकट सम्बन्ध स्थापित कर सकते है। शान्ति में हम ईश्वरीय आत्मा से शिक्षा ओर आगे बढ़ने की प्रेरणा पाते हैं। ईश्वरीय राज्य में ईश्वर की इच्छा का ही शासन है। ईश्वर की इस प्रतीक्षा में, क्राइस्ट की अन्तरात्मा हमारे भीतर क्वेकर्स के कार्य को प्रोत्साहित करती है। इन कार्यो से अंत में ईश्वर के राज्य और ईडन जैसी स्थिति बन सकती है।

Amdreas Brand, Sweden Yearly Meeting.

जीसस ने प्रभु की प्रार्थना में, उससे एक अपील की है।
'' तुम्हारा राज्य प्रथ्वी में आये स्वर्ग की तरह धरती में भी तुम्हारा स्वागत हो मैथ्यू6:10 यह प्रार्थना दर्शाती है कि जीसस ने ईश्वरीय राज्य को प्राथमिकता दी। क्या हम यह नहीं कह सकते कि ईश्वर का राज्य धरती पर आयेगा जबकि धरती पर ईश्वरीय इच्छा का वैसा ही सम्मान होता है जैसा कि स्वर्ग में। ऑखों से दिखनेवाला जो द्रष्यमान जगत है वह पूर्ण रूप से अद्रश्य जगत ;Invisible World) का ही प्रतिबिब और परछाई है। हम यह कह सकते हैं ईश्वर के राज्य में प्रत्येक वस्तु ईश्वर की इच्छा और शक्ति के आधीन हैं। निर्विवाद रूप से जबकि संसार के राज्य में ईश्वरीय इच्छा के मार्ग में बाधाएँ है।

MIKHEIL ELIZBARASHVILI (Misha)

TBILIST Workshop group Georgia.

अपने सिद्धान्तों को लागू करने के बारे में हम बहुत कम जानते हैं या वे संभवतः लगभग भुला दिये`गए हैं यह अत्यन्त आवश्यक है कि उन सिद्धान्त और मूल्यों जैसे शांति, न्याय, ईमानदारी, समानता और सरलता की शिक्षा व उपदेश, हमारे मित्रों के चर्च में एक बार पुनः दी जावे।
शान्ति के साथ ही हमें सहनशीलता, अहिंसा, हमारी परंपराओं, मूल्यों और संस्कृतियों में जो भिन्नताएँ है उनका आदर करना है ऐसा उदाहरण पेश करना है। हमें उनके साथ भी न्याय करना है जो असहाय और शोषण व दबाव के शिकार है और जो कानून का ज्ञान नहीं रखते या न्यायिक सलाह से वंचित होने के कारण गलत और अन्यायपूर्ण तरीकों से जेलों में दंड भोग रहे है। हमारे कामों स्कूलों और घरों में हमारी प्रामाणिकता ईमानदारी के आधार पर तय होना चाहिए। हम स्त्री–पुरूषों लिंग भेद के बीच कोई भेद न करते हुए, अधिकारों और उत्तरदायित्व की समानता का भाव अपने जीवन में रख सकते हैं। बच्चों, नौजवानो ओर वयस्को के समबन्ध में हमारे सोचने और बोलने का ठंग सरल होना चाहिए। यदि हम शांति, न्याय, ईमानदारी, असमानता और सरलता का व्यवहार प्रतिदिन के जीवन में करते हैं तो ये सिद्धान्त हमारे जीवन में अच्छे निर्णय लेने में सहायक होंगे।

Ronald Rudy Romas Mendez,

National Evangelical Friends Church

In Bolivia.

ईश्वर की इच्छानुसार कार्य करने का व्यकित्गत तौर पर मैं क्या अर्थ लगाता हूँ? अपने प्रतिदिन के कार्यो में इसे कितनी अधिक प्राथमिता ;च्तपवतपजलद्ध देता हूँ?
पूर्वी बोलीविया में क्वेकर्स के कार्य रोजाना के कार्यो व अन्य क्षेत्रों में भी दिखाई देते हैं। कितने ही मित्रगण अपने चर्चा के समानांतर अन्य संस्थाओं में कार्य कर रहे हैं। वे गर्भपात, बुराईयों, और घातक बीमारियों जैसे भ्प्टध्।पके से लोगों के जीवन की रक्षा कर रहे हैं। अन्य कई लोग बच्चों के सन्तुलित विकास पर नजर रखने का कार्य कर रहे हैं। और ऐसे लोग भी है जो समाज` बाहर निकाले गए लोगों तक ईश्वरीय संदेश पहुँचा रहे हैं, ऐसे लोग जो समाज की मुख्यधारा से अलग है और जिनकी ओर ध्यान देने की खास जरूरत है जैसे विभिन्न गैंगों के सदस्य।

Abham R. Carrillo A.

Friends Evangelical, Church in Bolivia

धरती पर ईश्वरीय राज्य की स्थापना के`लिए मैं कैसे कार्य कर रहा हूँ?
पाल के अनुसार शान्ति दूसरों पर विजय प्राप्त करने से नहीं आई वह तो प्रेम और न्याय से आई जैसा कि सूली पर चढ़े क्राइस्ट ने प्रदर्शित किया है। जिन लोगों ने क्राइस्ट के नाम का बपसिस्मालिया ने क्राइस्ट के बन गए अब कोई न ज्यू रहा और न ग्रीक न गुलाम न आजाद, न कोई पुरूष रहा और न स्त्री –––सभी जीसस क्राइस्ट से एकाकार हो गये।

(Galations 3:27-28)

मित्रों के लिए भी संसार ऊंचे धरातल पर उठ गया! क्राइस्ट के संदेश के अनुसार उन्होंने स्त्रियों को समानता की द्रष्टि से देखा और उन्हें प्रबन्ध करने के लि प्रोत्साहित किया। हिंसा का शपथपूर्वक त्याग

किया, सत्य का एक ही मापदंड अपनाया और उस सत्य के लिए जेल जाने के लिए भी इच्छा दर्शाई––
वह सत्य जो उन्होंने ईसा के प्रकाश में देखा।

Marvin Habbard, Aoteroa
New Zealand Yearly Meesting.

महानता के उच्च धरातल पर प्रतिष्ठित, क्राइस्ट के सम्पर्क में आने पर क्या मेरा जीवन भी उच्च बन गया है? यदि ऐसा है तो यह कैसे संभव हुआ। एक क्वेकर होने के नाते मैं कैसे अनुभव करता हूॅ कि मैं ईश्वरीय राज्य में भाग ले रहा हूॅ?

खंडित संसार The Broken World

खंडित होने की स्थिति से हम सब परिचित है। यह विश्वव्यापी है। और सारे संसार को प्रभावित करती है। हम सोचते हैं केवल हम ही दूत से प्रभावित है परन्तु ऐसा नहीं है। खंडित होने की प्रकृति को समझने के लिए हमें सही समझने की योग्यता का विकास करना आवश्यक है देवदूत की शांति घोषणा के सन्दर्भ में हमें खंडित होने के सही और उपयुक्त अर्थ को ग्रहण करना समक्षना आवश्यक है।

खंडित होना अपूर्ण होने की स्थिति का नाम है। मैंने अनुभव किया है कि अनेक वस्तुएँ ऐसी थी जिनमें काफी उपयोगिता बाकी थी परन्तु उनकी खंडित होती स्थिति ने उन्हें उपयोगिता से हीन कर दिया। इसकी तुलना मानवीय स्थिति से करने पर खंडित होने की भावना का पता चलता है। हमारी प्राकृतिक दशा इस स्थिति पर परदा डालने या छुपाने का ही एक प्रयास है।

Kenin Mortimen, Jonia Yearly Meeting

मैंने अपनी खंडित होने की स्थिति को कैसे छुपाया है?

झूठ, निम्नकोटि का आचरण, असावधानी, अविचार, जिसके कारण हम उच्च आदर्शो के अनुसार कार्य नहीं करते आदि नकारात्मक विचार – ये सब मिलकर ईश्वरीय रचना के सम्बन्ध में व्यक्तियों के मन में सन्देह उत्पन्न कर देते हैं। प्रारंभ में ही यह धारणा कि कोई चीज खराब है इसमें जहर घोल देती है। इसीसे भय, क्रोध, निष्क्रियता और विनाश्कारी आक्रमण के भाव उत्पन्न होते है।

Algitdas (Algss) Davidali cus,Vilnis

आज बहुत से ईसाई चर्च विशेषकर पश्चिमी संसार में समलैंगिकता और सजातीय विवाद को सब सहन कर रहे हैं जो अफ्रीकन क्वेकर्स के अनुसार ईश्वरीय इच्छा के विरूद्ध है और अप्राकृतिक है फिर भी पश्चिमी देशों के क्वेकर्स इस बात पर आश्चर्य व्यक्त करते हैं। कैसे अफ्रिकन क्वेकर्स बहु विवाह को खुशी से स्वीकार करते हैं।

जिसे वे स्वयं गैरकानूनी और विलासिता पूर्ण समझते हैं। यह संसार बुराइयो से भरा है। यह खंडित संसार है जहॉ विज्ञान को ज्ञान का सबसे अधिक विश्वसनीय स्त्रोत मानकर पूजा जाता है औयर ईश्वरीय ज्ञान को दरकिनार कर बेकार माना जाता है।

ए. Malenge, Narobi Yearly Meeting, Kenya

हम एक ऐसे संसार में रह रहे हैं जो उथल–पुथल से पूर्ण है और यह केवल पर्यावरण प्रदूषण के कारण नहीं है। इस संसार में हम खाद्यान्न की कमी, कामगारों की हड़ताल, मानव–अधिकारो का विश्वव्यापी उल्लंघन, आणविक दुर्घटनाएँ और ड्रग्स लेने वालों की संख्या में वृद्धि देखते हैं। ये सब मुख्य रूप से आन्तरिक अशांति के कारण है और इन सब का प्रत्यक्ष प्रमाण जीवन पर और विशेषकर इनसे प्रभावित स्त्रियों पर दिखाई देता है। विवाह, परिवार, पहचान, सिद्धान्तों ओर मूल्यों, आस्था और विश्वास तथा आशा का संकट है। अहंकार और ईर्षा का स्थान प्रेम और सम्मान से कहीं ऊपर हैं।

हम मित्रों को,इस खंडित ओर उथल–पुथल से पूर्ण संसार के बीच ईश्वरीय राज्य में रहने की ज्वलन्त समस्या चुनौती को स्वीकार करना चाहिए। इस लक्ष्य को पाने का एकमात्र उपाय जीसस के शब्दों का पालन करना है जो कहते हे।–––'' तुम धरती के नमक और संसार के प्रकाश हो '' हमारे विचार कार्य रूप में परिणित होना चाहिए।

EstebanAynota Agnota, National Eaingelicon
Friends Church in Bolvia.

इस खंडित संसार के अनेक प्रमाण हमारे आसपास बिखरे हुऐ हैं। भूकंप ने न्यूजीलैंड के क्राइस्ट चर्च को तबाह कर दिया। गत वर्ष के विनाशकारी भूकंप के बाद एक नये भूकंप की आशंका चिली में अनुभव की जा रही है। जिन स्थानों में वर्षो से हिमपात नहीं हुआ वहॉ भीषण बर्फबारी हो रही है। कई स्थानों में लगातार सूखें से तो कहीं बाढ़ से फसले नष्ट हो रही हैं।

हम अभी भी खंडित संसार में रहते है। जीसस पर हमारा विश्वास भी इस टूटते हुए संसार और हमें नहीं बचा पा रहा है। तमाम बुरी बातें अभी भी हो सकती है। संभवतः जीसस हमें स्मरण दिलायेगें कि हम ऐसी स्थिति में निराश न हो क्योकि संसार की वस्तुएॅ सदा के लिए नहीं हैं।

Trish Edward Konic, Mid American
Yearly Meeting.

यह टूटा संसार मेरे जीवन पर कैसा प्रभाव डालता है? उसके लिए मैं क्या योगदान दे सकता हूॅ?
मैंने पता लगाया है कि इस विशाल और बहुंख्यक परिवार में हमें कम से कम तीन मूल्यवान उपहार मिले है।

प्रथम है '' ईश्वरीय राज्य'' की अनुभव की गई छवि जो हमें यहॉ और अभी ऐसे राज्य के निर्माण के लिए प्रोत्साहित करती है। दूसरी जिसे हम अपनी आस्था और विश्वास का फल कह सकते है। –– वह है अपनी पहचान और प्रामाणिकता हमें एक दूसरे को स्मरण दिलाना है कि हम सबको मिलकर उसके लिए काम करना है। तीसरी हमारी निर्णय लेने की पद्धति। आराधना की बैठकों में शामिल होते समय हम प्रयत्सयन करें तो यह संभव है कि हम विश्वव्यापी मित्रों के रूप में एक विश्वव्यापी मित्र समुदाय की संस्था के निर्माण के लिए एक सूत्र में बॅध जाये। आज इस बात की आवश्यकता हैकि अपनी प्रामाणिकता की ताकत से अपने संसार को बदल डालें।

और मित्रों कभी जिसकी आवश्यकता थी वह सामने है। हम जलवायु,जैवविविधता, खाद्यान्न, जल स्त्रोत, ऊर्जा, आर्थिक स्थिति और सुरक्षा से संबंधित परस्पर अर्न्तविरोधी चुनोतियों का सामना कर रहे हें। रचनात्मक योगदान के लिए हमें मित्रों के बीच प्रयास करना चाहिए।

Kees Nieuwerth, Netherlands Yearly Meeting.

परमाणात्मक आकलन या मूल्यॉकन–पश्चिम विचार धारा में प्रधान हो गा है। वह आवश्यक अंर्तज्ञान जिस पर विशेष ध्यान देने क जरूरत है–– वह यह है कि सम्बन्ध वस्तुओं की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण और आधारभूत है। निश्चित और विश्वव्यापी समाधान और उत्तर केवल एकता के भाव ओर चेतना के द्वारा ही प्राप्त हो सकते हैं।

मित्र के समाज में हमें एक ऐसा बेजोड़ अवसर मिला है जहॉ ह संसार में परिवर्तन लाने के उत्तरदायित्व और विश्वव्यापनी एकता की भावना और महत्व को समझें कि भिन्नता होते हुए भी हम सब मूल रूप से एक ही हैं।

प्रेम के प्रकाश की भावना से जो विश्व सम्मेलन सम्पन्न होने जा रहा है आइये––उसके अर्थ को समझें।

Jalka German Yearly Meeting.

वह क्या है जो मुझे इसे खंडित अवस्था से परे, क्राइस्ट की सम्पूर्णता को देखने के योग्य बनने में, सहायता प्रदान करता है।

'' खंडित और टूटते हुए संसार '' के विषय ;जीमउमद्ध ने मुझे झकझोर दिया परन्तु उसन जो प्रतिरोधी भाव उत्पन्न किया उसने मुझे विरोध करने के लिए उकसाया। मैं इसके विपरीत टूटते खंडित संसार की चर्चा ''संसार के सुधार की और उससे भी आगे बढ़कर संसार की बदलने की बात करूॅगा। जैसा कि सत्य है और

हमेशा से रहा है। हमारी कहानी प्रारंभ से आज तक अदभुत रही है। हम यह नहीं जानते कि यह कहानी आगे हमें कहॉ ले जायेगी परन्तु हमारे पास निश्चित रूप से भावी विश्व के लिए कल्पना और आकॉक्षाएं है।
कभी–कभी मैं सोचता हॅू कि मित्रगण उस भावी स्वप्न पर दूसरों से अधिक विश्वास करते हैं। इस संसार मे अभी ईश्वरीय राज्य का निर्माण करने के लिए यह धारणा कि वह राज्य यहॉ ही है–– यह हमें विश्वास, आत्मविश्वास, और साहस प्रदान करता हैं जिससे हम काम करने, आराधना करने तथा संसार को सुधारने और परिवर्तन करने की शक्ति इस संसार में पाते है। जहॉ बड़ी समस्याएॅ मौजूद है।

Arne Springorum, Prague Recognised
Meeting Czech Republic.

क्या '' खंडित संसार की शब्दावली मुझे विरोध करने के लिए उकसाती है जैसा कि आरने ने किया–– तो कैसे?
तुमने सुना होगा जो कहा गया है '' ऑख के बदले ऑख और दॉत के बदले दॉत '' पर मैं तुमसे कहता हूॅ कि दुष्ट व्यक्ति का विरोध नहीं करो। न्याय की धारणा में सुधार हो रहा है। और इसमें बदले की भावना नहीं हैं न्याय की धारण और भी स्पष्ट हो गई जब मैंने देवदूत के शब्दों का सुना कि शांतिदूत बनने के लिए हमें न्याय के लिए काम करना चाहिए।
अन्याय की समाप्ति से, टूटने की स्थिति से बचा जा सकता है। न्याय की आवाज उठाने वाले शांतिदूत बन जाते है। और जिन पर ईश्वर की कृपा सदा बनी रहती है।
क्या में शांति के दूत के रूप में रह रहा हूॅ?
इस सम्मेलन में बहुत से व्यक्ति आए हैं इनमें कई सनकी और विचित्र व्यवहार वाले लोग हैं। सभी शांत और अच्छे लोग नहीं है जैसे क्वेकर्स हैं दो उल्लेखनीय अवसरों पर धार्मिक नेताओं का वेश धारण किये भेड़ की खाल में भेड़िये जासूसों ने अपने उद्वेश्यों की पूर्ति के लिए सम्मेलन में भाग लिया। वर्तमान मेंबर्स मे से कई रूआंडा, बुरून्डी और कॉगो के शरणार्थी है। उनकी समझ और अनुभव मीटिंग को गंभीरता और गौरव प्रदान करते हैं। उनके शब्दों में उनका दर्द और आनन्द झलका है जिसे वे परस्पर बॉटते है इस छोटे समूह में और इस असुरक्षित स्थान में अलगा संभव है परन्तु जुड़ाव और परस्पर संबंध भी है। अपने प्रति सचाई है। परन्तु दूसरों से जुड़ने का भी भाव है।
इस सम्मेलन में अनेक प्रकार की भावनाओं की तीव्र उत्तेजक भावनाओं से लेकर, घोर कष्टों की अभिव्यक्ति तक हुई यह विरोधाभावी स्थिति मेरे जीवन को खुशनुमा बनाती है।

Betsy Coville, Central and Southern
Africa Y M, South Africa.

हम अपने बीच में अजनबियों को देखकर इसमें से संभवतः कुछ जासूस भी हो सकते हैं कैसी प्रतिक्रिया करते है –

मित्रो की अनेकता भिन्नता थ्तपमदके क्पअमतेपजल

मित्रों के संयुक्त मीटिंग बोर्ड में : क्वेकर विचार दर्शन की भिन्नता और अनेकता के सन्दर्भ में मेरी सेवा एक शिक्षा रही । नीति संबंधी मामलों मे बोर्ड में विचार विमर्श हुआ थ्ळड . थ्न्ड की वार्षिक बैठकों में और थ्नउ के मित्रों की वार्षिक बैठकों में गहन रूप से एक दूसरे से चिार विमर्श हुआ। अच्छा कार्य हुआ उपदेशात्मक प्रतियोगिताओं के दौरान वाद–विवाद में मैंने ऐसे शब्द सुने जिन्होंने मुझे बदल दिया। ईसाई क्वेकर्स में से एक ने मिनके साथ मेरा विवाद और समस्या थी ने कहा '' तुम्हारे पूर्वीय तट के मित्रों के पास आगे बढ़ने और मुडने के लिए थ्ळड है परन्तु यदि थ्न्ड अलग होता है तब मैं कहॉ जाऊॅगा''

उसके इस आघात का मुझे अनुभव हुआ जब मैंने उसके नुकसान ओर संकटपूर्ण स्थिति को समझा। मुझे स्पष्ट हो गया कि उनकी आस्था और, विश्वास उसके लिए उतना ही महत्वपूर्ण था जितना कि मेरा –मेरे लिए हमारे धर्म ज्ञान अलग अलग थें परन्तु हमारा क्वेकर्स दर्शन हम दोनो के लिए समान रूप से विचार का केंन्द्र विन्दु था।

Carol Holmes, Newyork yearly Meeting.

क्या मैंने विभाजन करने वाली अलगाव की भावना बढ़ाने वाली ''शत्रुता की दीवार'' का अनुभव किया है। यदि ऐसा है ता मैं इसे हटाने के लिए क्या कर रहा हूँ ताकि लोगों में एकता की भावना पैदा हो सके? प्रायः ऐसा होता है कि जब हम अपने मित्रों के बीच भिन्नता का अनुभव करते है। तब अन्य समस्याएँ भी सामने आती है। समान विचारधारा और एकता के भाव के बगैर लोग मनमानी करते हैं। एकता की भावना के अभाव में ही अनैतिकता और गहरा भेदभाव बढ़ता है। कभी–कभी हम असंभव सी दिखने वाली परिस्थितियों के बीच अपने का पाते है। हम पर हर तरफ से दबाव पढ़ता है और बचाव का कोई संभव रास्ता नजर नहीं आता

Jjohn Kidake, Nairobi Yearly Meeting.

मित्रों के बीच में मैंने अपने आपको असंभव सी लगने वाली परिस्थितियों के बीच पाया है एकता की भावना को मैंने कैसे बढ़ाया है?

होवर्ड एच0 ब्रिन्टन ने अपनी पुस्तक '' 300 साल के मित्र'' 1965 में मित्रों के इतिहास को चार भागों में बॉटा है–––

शोर्यकाल, 1650–1700, सांस्कृतिक रचनात्मकता का काल 1700–1800, संघर्ष और पतन का काल 1800–1900 और 1900 से आधुनिक काल। स्थिति का यह परिवर्तन धीरे–धीरे हुआ। भिन्न –भिन्न कालों में क्वेकरिजनम की प्रकृति भिन्न हो गई। विभिन्न क्षेत्रों में कुछ क्वेकर्स अभी–भी तीसरे, दूसरे और यहॉ तक कि क्वेकरिज्म के पहले काल का अनुभव कर रहे है। मैं व्यक्तिगत रूप से विश्वास करता हूॅ कि अभी भी क्वेकर दर्शन ;चैपसवेवचलद्ध का पॉचवा युग जिसे मैं '' धर्म निरपेक्षता '' का युग कहता हूँ, 2000 से आने को है। यह वह समय है जब संसार चर्च में आ गया है और उसे बुरी तरह से प्रभावित कर रहा है। यह वह युग और समय है जब ईसाई लोग '' आध्यात्मिक शून्यता'' का अनुभव कर रहे हैं। ऐसा युग ––––जहॉ सासांरिक तस्तुओं ने लोगों के हृदय में ईश्वर से भी अधिक स्थान ले लिया है। वे वस्तुवादी भौतिकतावादी बन गए हैं। उनके जीवन में ईश्वर का वह स्थान नहीं है जो होना चाहिए। अब दैवी सत्य विश्वास नहीं र गया है।

ZI Malenge, Narobi, Yearly Meeting Kenya.

जार्ज फाक्स और प्रारंभिक क्वेकर्स यदि संसार में दुबारा लौटते तो वे क्वेकर्स की भिन्नता को पहचान पाते या स्वीकार करते?

अपने समुदाय में वह पहलू जिसे मैं सर्वाधिक महत्सपूर्ण और मूल्यवान समझता हूॅ वह है व्यक्तिगत धार्मिक अंर्तद्रष्टि और अभिव्यक्ति के सम्बन्ध में उनका खुला और, उदार द्रष्टिकोण यद्यपि ईसाइयत ही क्वेकर विचारधारा का मूल है, परन्तु इसके बावजूद दूसरों के द्रष्टिकोण के प्रति भी उनमें आदर का भाव है। मैं प्रत्येक रविवार को दो मित्रों के साथ मीटिंग में जाता था। उनमें एक हिन्दू और दूसरा जैविश था। हम सभी एक साथ मिलकर आराधना करने में प्रसन्नता का अनुभव करते थे कहीं कोई असुविधा का भाव नहीं था। प्रारंभिक क्वेकर नेताओं में से एक विलियम पेन कहते थे'' सरल दीन और विनम्र, दयावान न्यायपथ पर चलने वाले, पवित्र और समर्पित आत्माएँ हर धर्म में है। मृत्यु के बाद वे एक दूसरे को पहचानेंगे संसार में भिन्न–भिन्न पोषाकों और रूप के कारण वे एक दूसरे के लिए अजनबी बन जाते है। –––''

Betsy Coville, Johansburg, South Africa.

क्वेकर्स अपनी आराधना पद्धति और यहॉ तक कि अपने विश्वास और अभ्यास के सम्बन्ध में एक दूसरे से बिलकुल भिन्न हैं फिर भी वे इन भिन्नताओं के होते हुए भी वे एकता का भाव कहॉ से पाते हैं? और समान रूप से किन मूल्यो की घोषणा करते हैं।

2011 में ध्रवीकरण मसले पर चर्चा हो रही थी। एक मित्र ने कहा कि वह बौद्धिक रूप से मसले पर सहमति देने की आवश्यकता को समझती है। संस्था के लाभ के लिए परन्तु उसकी अंतरात्मा उसकी बौद्धिकता को नष्ट कर देती है और उसे '' मंजूर '' शब्द कहने से रोकती है– दूसरे मित्र ने सरलता से उत्तर दिया '' हम नहीं चाहेंगे कि आप ऐसा कुछ करें जो आपकी आत्मा के विरूद्ध हो''

इस तरह से परस्पर उदारता के द्रष्टिकोण के बीच बोर्ड सामान्य आधार को पाने में सफल हुआ– यद्यपि यह आधार छोटा था, परन्तु उनके लिए पर्याप्त था।

Corol Holmes, New York, Yearly Meeting.

21 वी शताब्दी में क्वेकरिज्म का क्या भविष्य है?

मित्रों के बीच भिन्नता उनकी शक्ति को कम आंकती है या उसकी शक्ति को मूल्यवान बनाती है।

सहिष्णुता

एक मानवताााद और आन्तरिक विश्वास

(Ecumenism and Inter faith)

जब मैं बच्चा था, मेरे माता पिता मुझे चर्च की विश्व कौथिक के एक सम्मेलन में ले गए। मैं चर्च में सम्मानि विभिन्न नस्लों, वेशभूषाओं, भिन्न–भिन्न आराधना पद्धतियों और परम्पराओं, भिन्न–भिन्न भाषा बोलने वाले लोग––––जो सब क्राइस्ट के क्रास तले एकत्र हुऐ थे लोगों को देखकर आश्चर्य चकित हो गया। कालेज के दिनों में मैंने उत्तरी अमेरिकन एक मानवतावादी नययुवा सम्मेलन में भाग लिया और उन नवजवानों के साथ जो कि औपचारिक एंग्लिकन और रूढ़िवादी परम्पराओं को मानने वालों से लेकर मुक्ति सेना तक के थें अध्ययन किया व आराधना की, यद्धपि हममें काफी भिन्नता थी पर इसके बावजूद हमने मिलकर गाया।

'' यदि कोई तुमसे पूछे कि मैं कौन हूॅ तो उनसे कहना कि मैं ईश्वर का पुत्र हूॅ '' हमारे अफ्रिकन अमेरिकन गीत गायक नवजवान पादरी आगे चलकर संयुक्त राष्ट में अमेरिका के एम्बेसेडर बने।

सहिष्णुता ; ंबबमचजंदबम ंदक ंपिदउंजपवद व िमंबूमजीमदद्ध की कल्पना को प्राप्त करन के लिए कभी–कभी हम सोचते हैं कि उच्च स्तर की संस्थाएं इस दिशा में युक्ति पूर्ण ठंग से काम कर सकती हैं। मनुष्य की संस्थाएं ईश्वरीय इच्छा के प्रति विश्वास और वफादारी रख सकती है या नहीं भी रख सकती परन्तु यहॉ एक अच्छी खबर है–

यह क्राइस्ट का प्रेम जो सदा हमारे बीच में है जैसा क पाल करते हैं '' प्रेम से ही शत्रुता का नाश हो सकता है और इससे एक नई प्रेममय मानवता का निर्माण हो सकता है और जीसस की प्रार्थना का ;John 17:21) Ut unum sint यही उत्तर है– ये सब एक हो सकते हैं ''

David Hadley, Illinois and Western Yearly Meeting

सहिष्णुता के उद्वेश्य को पूरा करन के लिए मैंने किन क्रियाकलापों ;Activities) और आन्दोलन में भाग लिया?

एक सहिष्णुतावादी होने के नाते, जैसा कि मित्रों के एक समुदाय में मैंने देखा है कि सहिष्णुता का अर्थ यह नहीं है कि इसका पालन करने से प्रत्येक धर्म की विशेषताएँ और पहचान समाप्त हो जायेगी या उन्हें अपने सिद्धान्तों को स्वीकार करना विरोध नहीं करना और अपनी धार्मिक पहचान का कायम रखते हुए दूसरों के साथ एकता का भाव बनाये रखना है। यह इस उथल–पथल और संघर्ष से भरे हुए खंडित संसार में जो कभी भी पूर्ण और आज जितना परस्पर निर्भर नहीं रहा राहत देने वाला मानवीय अनुभव होगा।

Natashazhuravenkova, Moscow, Monthly Meeting.

क्या मेरी मीटिंग भिन्न भिन्न आस्था रखने वाले लोगों के बीच, अच्छे सम्बन्धों को सक्रिय रूप से बढ़ाती है यदि ऐसा है तो कैसे और किनके साथ?

जीसस ने पीड़ित कष्ट भोग रही मानवता का आव्हान इन शब्दों में किया '' श्रम से थके और बोझ से लदे लोगों मेरे पास आओ और मैं तुम्हे आराम दूंगा। ये शब्द ईसाइयों के लिए बाइबल का संदेश बन गये ताकि वे आहत और कुचले हुए लोगों तक पहुँच सके और उनका ध्यान और शक्ति निराशा के बीच ईश्वरीय ज्ञान का नया अनुभव करने की ओर लगा सकें।

सेवा भाव पर विशेष ध्यान हमेशा ईश्वर को समर्पित और अपने उद्वेश्य के प्रति प्रतिबद्ध लोगों में एकता पैदा करने में सहायक होता है। इसीसे ईसाई लोग दूसरी जातियों के लोगों भिन्न–भिन्न विश्वास रखने वाले के साथ साथ काम कर पाते है। इसका उद्वेश्य लोगों की निराशा को दूर करना है। सेवा के मार्ग में परस्पर सहयोग भिन्न भिन्न आस्था वाले लोगों के बीच संभव है क्योंकि सारे मनुष्य एक ही ईश्वर द्वारा बनाये गए हैं।

क्योंकि सभी आस्थाएँ और विश्वास मनुष्य की कोमल भावनाओं से सम्बन्ध रखते हैं और उच्च महान मूलयों जैसे प्रेम, न्याय एकता, सत्य, सेवाभाव और करूणा को ऊँचा उठाते हैं सभी लोग खंडित संसार की समस्याओ को दूर करने के उद्वेश्य से एक जुट हो सकते हैं।

Oliver Kisaka Simixa, Narobi Yearly Meeting, Kenya.

अन्याय का मुकाबला करने के लिए, मैं दूसरे धर्मावम्बियों के साथ मिलकर किस तरह से काम कर सकता हूँ?

मैं 15 वर्षो से अभी तक एक क्वेकर रहा हूँ। एक धार्मिक इतिहासकार होने के नाते मुझे प्रायः आश्चर्य और साथ ही आनंद भी होता है जब मैं भिन्न–भिन्न आस्था रखने वालें लोगों को मित्रों के समान आराधना करते हुए देखता हूँ। मैं रसियन, रूढ़िवादी चर्च और पुराना विश्वास रखने वालों, भिन्न–भिन्न प्रोटेस्टेंट समुदाय के मेम्बर्स तथा बुद्धिस्ट और मुस्लिम लोगों को एक साथ क्वेकर्स की मीटिंग में आराधना के लिए साथ देखता हूँ।

मेरी मीटिंग की यही सचाई है यद्यपि यह ईसाई समुदाय ही है।
मै अनुभव करता हूँ क मित्रों के बीच धार्मिक और सामाजिक सहिष्णुता सहनशीलता हमारी स्पष्ट और सकारात्मक प्रामाणिकता क्वेकर के प्रत्यक्ष प्रमाण संसार में हमारी आध्यात्मिक परम्परा को और अधिक गहरा और अथ्रपूर्ण बनाते हैं। और यह सब सहिष्णुता के भाव को ऊँचा उठाने का बहुमूल्य स्त्रोतहै।

Natashe Zhuavenkkoya, Moscow Monthly Meeting.

क्या मेरी मीटिंग 'बहुविश्वासी समुदाय' का प्रतिनिधित्व करती है जैसा कि ऊपर वर्णित है————यदि ऐसा है, तो कैसे?

आगे पठनीय थ्नतीमत त्मंकपदह

आगे पठनीय सूची किसी भी रूप में विस्तृत और व्याख्यापूर्ण नहीं है और न ही कान्फ्रेन्स के व्यवस्थापक लेखकों द्वारा व्यक्त विचारों की पुष्टि करते हैं।
इनमें से कुछ प्रकाशन दूसरे प्रकाशनों की अपेक्षा विस्तृत रूप से उपलब्ध है। स्त्रोतों ":वनतबमेद्ध में जनरल कान्फ्रेन्स बुकशाप ; www/quakerbooks.org) तथा ब्रिटेन की वार्षिक बैठक बुकशाप ;.quaker.org.u.k/shop) तथा पेंडल हिल बुक स्टोर ;pendlehill.org/cqd स्टोर सम्मिलित हैं।
इस सूची का निर्धारण ''थीम'' के आधार पर नहीं किया गया है क्योंकि अनेक टाइटल एक से अधिक विषयों की चर्चा करते व उससे संबंधित है।

———

विभिन्न पुस्तकों की सूची –

Spirit Rising.